3

वाह! क्या दिन हैं?

सरोज यादव*

इक्कीसवीं. सदी में स्त्री व पुरुष कंधा से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रहे हैं। दोनों ही अपनी हर ज़िम्मेदारी का निर्वाह समान रूप से कर रहे हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिलाओं ने अपने पैर न जमाएँ हो, परंतु आज भी सामाजिक रूढ़ियों व दकियानूसी मानसिकता के चलते महिलाओं और पुरुषों के बीच भेदभाव देखने को मिलता है।

यह कहानी वर्तमान समय में भी हो रहे जेंडर आधारित भेदभावों को दर्शाने का प्रयास करती है और बताती है कि किस तरह हमारे देश में लड़कियों को दोयम दर्ज़े का मानकर उनके साथ आजीवन भेदभाव होता है। जहाँ लड़की के जन्म पर किसी भी प्रकार का उत्सव नहीं मनाया जाता वहीं, लड़के के जन्म पर माँ का भी अच्छे से ख्याल रखा जाता है और लड़के और लड़कियों में शिक्षा, स्वास्थय, खानपान, बाहर जाने की अनुमति इत्यादि में भी भेदभाव होता है।

यह कहानी लड़के और लड़कियों के बीच भेदभाव न करने व इन भेदभावों के प्रभावों पर भी बात करती है साथ ही परिवार और समाज की सोच को बदलने पर बल देती है। कोई भी देश अपनी आधी आबादी को पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता। आवश्यकता यह है कि परिवार की सोच बदले तथा दोनों को जीवन जीने के समान अवसर मिले। स्त्री-पुरुष के कार्यों का निर्धारण उनकी क्षमताओं, योग्यताओं व रुचियों के आधार पर हो। तभी समाज सही मायनो में आगे बढ़ सकता है। समाज में समानता लाने के लिए सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों को सार्थक बनाने हेतु हम सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है।

मैं घर में सबसे बड़ी हूँ। मुझसे छोटी तीन बहनें हैं। मुझे पाँच साल पहले की बात याद आ गई जब हमारे घर में एक छोटे भाई का जन्म हुआ था। घर में थाली बजाई जा रही थी। मैं सोच रही थी काश! मेरे माता-पिता मेरे जन्म पर भी इतनी ही खुशी मनाते जितनी कि मेरे भाई के जन्म पर मना रहे थे। मैं एक कोने में बैठी सोच रही थी कि बेटी पैदा हो जाने पर ऐसा क्या हो जाता है जो सारे घर में निराशा छा जाती है। यही नहीं बेटी पैदा करने वाली माँ के खाने-पीने पर भी कम ध्यान दिया जाता है जबकि बेटा पैदा करने वाली माँ की खूब खातिर होती है।

मेरा भाई बड़ा होने लगा। हम दोनों खेलने लगे। मेरा भाई जो मुझसे छोटा था उसे स्कूल में दाखिल करा दिया गया। उसके लिए नया बस्ता, नई किताबें, नए जूते, नई स्कूल ड्रेस भी आ गई। मेरी दादी उन सबको देख कर फूली नहीं समा रही थीं। स्कूल जाने

*प्रोफ़ेसर एवं डीन (अकादमिक), रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

के पहले दिन जैसे ही, मेरा भाई स्कूल ड्रेस पहन कर तैयार हुआ तो मेरी दादी व मेरे पिताजी के मुँह से निकला, "क्या सुंदर लग रहा है हमारा बेटा! बड़ा होकर एक दिन ज़रूर अफ़सर बनेगा।"

तभी माँ ने आवाज़ लगाई,"लक्ष्मी, भाई को दही व चीनी खिला, पहले दिन स्कूल जा रहा है।" मैं दौड़ कर दही व चीनी लेने चली गई। मैं कुछ देर के लिए भूल गई थी कि स्कूल में मैं नहीं, मेरा छोटा भाई जा रहा है। मेरा छोटा भाई जिसका नाम रमेश है, दही खाने लगा। मैं कभी उसकी कमीज़ को हाथ लगा कर देखती, कभी उसके बस्ते को अपनी पीठ पर लगा कर देखती। इतने में रिक्शे की घंटी बजी और रमेश अपने बस्ते के साथ दौड़कर रिक्शे में बैठ गया। मेरा सारा दिन उत्साह में बीत गया और मैं इंतजार करने लगी रमेश के स्कूल से लौट कर आने का। जैसे ही मेरा भाई स्कूल से दोपहर को आया, माँ उसके लिए खाना पकाने रसोई घर में चली गईं। वे भाई के लिए एक थाल में भाजी, दही व चपाती रखकर ले आईं। मैंने माँ से कहा,"मेरा खाना कहाँ है? मैंने तो सुबह से कुछ नहीं खाया और तुमने मुझसे पूछा भी नहीं कि खाना खाया या नहीं।" माँ ने मुझसे कहा,"तू घर में ही थी खाने को किसी ने मना किया था क्या ? जा रसोई में से लेकर खा ले।" रसोई में सुबह की बनी रोटी व छाछ रखी हुई थी। मैंने कहा, "सब्ज़ी तो है ही नहीं।" इस पर दादी माँ ने कहा,"सब्ज़ी तो तेरे पिताजी व भाई को दे दी। खा ले छाछ के साथ कौन-सा तूने हल चलाना है या नौकरी करनी है। लड़कियों को ज़्यादा चटोरा नहीं होना चाहिए। जो बचा-खुचा मिल जाए खा लेना चाहिए।" मैं दो रोटी और छाछ का गिलास लेकर आँगन में चारपाई पर बैठ कर खाने लगी। मुझे दुख इस बात का नहीं था कि मुझे सब्ज़ी नहीं मिली, मुझे दुख इस बात का था कि लड़कियों के लिए ऐसी सोच क्यों है। विशेषकर दादी व माँ की। वे दोनों भी तो महिला हैं। वे भी तो कभी लड़की थीं। क्या उनकी दादी व माँ ने उनके साथ ऐसा ही बर्ताव किया था। क्या उनको भी यह सुनने को मिला था जो मैं रोज़ सुनती हूँ। जैसे कभी यह कह कर कि 'लड़की पराया धन है', कभी यह कह कर कि 'अच्छा खायेगी तो जल्दी बड़ी हो जाएगी, जल्दी शादी करनी पड़ेगी' और कभी 'लोगों की नज़र में न आ जाये,' बहुत बार मुझे आधे पेट या रूखा-सूखा भोजन ही नसीब होता है।

रमेश पास होकर दूसरी कक्षा में आ गया। मैं उसकी किताबों को देखती और मन ही मन सोचती कि काश! मेरी माँ व पिताजी मेरी भावनाओं को समझते और मुझे भी स्कूल जाने देते। मैंने बहुत बार अपने पिताजी से स्कूल जाने की ज़िद की लेकिन हमेशा की तरह एक ही जवाब दे देते, "लड़कियों का काम घर गृहस्थी को सँभालना है। तुम अपनी माँ के साथ घर के कामों में हाथ बटाओ। कुछ काम सीखो, नहीं तो ब्याह के बाद हमें उलाहना ही मिलेगा कि तुम्हारे माँ-बाप ने कुछ सिखाया था या नहीं।"

मैं सुबह से शाम तक छोटे बहन भाइयों की देख-रेख करती, माँ के साथ घर व खेत में काम करते-करते बड़ी होने लगी। एक दिन मेरे मामा-मामी गर्मियों में हमारे घर आए। उनके साथ उनकी दोनों लड़कियाँ भी साथ थीं। वे बहुत दिनों के बाद हमारे घर आए थे। मैं तो उनको अपनी याद में पहली बार देख रही थी। घर में सबसे ज़्यादा खुश मैं ही थी क्योंकि

© NCERT not to be republished

मुझे हम-उम्र सहेली मिल गई। माँ भी कई बार मीना के बारे में बात करती थी जो मामा की बड़ी लड़की थी।

एक दिन मीना अपनी किताब से मुझे ज़ोर-ज़ोर से एक कहानी सुना रही थी और मैं मूक बनी उस कहानी में खोई हुई थी। मीना की छोटी बहन गीता व मेरा भाई रमेश भी बैठा था। हम सब कहानी सुनने में इतने लीन थे कि पता ही नहीं चला कि माँ कब से वहाँ खड़ी थी। जब मामी ने माँ के कंधे पर हाथ रखा तब माँ चौकी और हम सब भी उधर देखने लग गए। "क्या देख रहीं थी दीदी?" मामी ने कहा। "मैं देख रही थी कि तुम्हारी दो लड़कियाँ हैं और तुम लड़कियों को पढ़ा भी रही हो।" माँ ने कहा।

माँ ने मामी से कहा, "रमा, क्या तुम्हें लड़के की कमी कभी नहीं खलती? परिवार में कम से कम एक लड़का तो होना ही चाहिए। पुत्र के बिना स्वर्ग में भी स्थान नहीं मिलता। पुत्र ही बुढ़ापे में माँ-बाप का सहारा होता है।"

मामी बोली, "मुझे भी छोटी लड़की के जन्म के समय माता जी व पड़ोस की ताई ने बहुत कहा। यहाँ तक कि ताने मारने भी शुरू कर दिए। वंश चलाने की दुहाई देने लगे। पर मैं और आपके भाई विचलित नहीं हुए। आज समय बहुत बदल गया है, लड़कियाँ, लड़कों से आगे निकल रही हैं। मैं ऐसे बहुत से परिवारों को जानती हूँ जहाँ लड़कियाँ पढ़ लिख कर अपने पैरों पर खड़ी हैं। अपने बूढ़े माँ-बाप की देखभाल लड़कों से ज़्यादा अच्छी कर रही हैं।"

मामी बोलती गईं और कहती गईं "एक और अपराध है जो लाखों बच्चों और खास तौर से लड़कियों के साथ किया जाता है। वह है कम उम्र में शादी। लड़कियाँ कच्ची उम्र में माँ बन जाती हैं, वह भी कई बच्चों की माँ। कई बच्चे तो जन्म के समय या जन्म के बाद मर जाते हैं और कई पुत्र की चाह में गिरा दिए जाते हैं। जल्दी-जल्दी बच्चे होने से ये कम उम्र की लड़कियाँ बीमारियों, परेशानियों व लाचारियों के दुष्चक्र में ज़िंदगी भर पिस कर रह जाती है।"

मामी एक ही साँस में इतना सब कुछ कह गईं और माँ, मामी की तरफ देखते-देखते पता नहीं कहाँ खो गईं। माँ को एक-एक शब्द ऐसा लग रहा था कि जैसे मामी उनकी अपनी बीती सुना रही हो।

आगे माँ को समझाते हुए मामी ने कहा, "आप सोचो आज समय बदल गया है। लड़कियाँ किसी भी मामले में लड़कों से कम नहीं हैं। आज ऐसा कोई क्षेत्र नही है। जिसमे लड़कियाँ काम नही कर रही है। चाँद पर जाने से लेकर हवाई जहाज़ लड़कियाँ चला रही है। पढ़ी-लिखी लड़की जहाँ भी जाएगी रोशनी फैलाएगी।"

अपनी बात को जारी रखते हुए मामी ने कहा, "हमारी बेटियों का जीवन, लालन-पालन और पढ़ाई-लिखाई काफ़ी हद तक हम माताओं पर निर्भर करती हैं। हमारे परिवार में शांति व सुख रहे यह हमारे ऊपर बहुत निर्भर करता है। घर के हर परिवार को उसकी ज़रूरत के हिसाब से पहनने, खाने व पढ़ने के अवसर दिए जाएँ। अगर बेटी कमज़ोर, बीमार, अनपढ़ व असहाय रहेगी तो परिवार पर ही उसका बोझ पड़ेगा। अकलमंदी इसी में है कि घर का हर सदस्य शिक्षित हो। दीदी, क्या कोई माली चाहता है कि उसके पेड़ पर आधे फल अच्छे व आधे कच्चे हों। क्या आप चाहती हैं कि आपके खेत की आधी फ़सल अच्छी

© NCERT not to be republished

और आधी खराब हो। तो फिर यह भेदभाव बच्चों के साथ क्यों?"

माँ ने कहा, "रमा, तुमने तो मेरी आँखें खोल दीं। परंतु नीलम तो अब बड़ी हो गई।" मामी बोली, "दीदी बच्चों के लिए नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 सरकार ने पास किया है। इसके अनुसार—

- भारत के 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बीच आने वाले सभी बच्चों को नि:शुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा मिलती है।
- इस अधिनियम के अनुसार ऐसा बच्चा जिसकी उम्र 6 साल से ऊपर है, जो किसी स्कूल में दाखिल नहीं हो पाया अथवा स्कूल गया भी परंतु अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाया, तब उसे उसकी उम्र के अनुसार उचित कक्षा में प्रवेश दिया जाएगा। सीधे तौर से दाखिला लेने वाले बच्चों के समकक्ष आने के लिए उसे प्रस्तावित समय सीमा के भीतर विशेष प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, जो प्राथमिक शिक्षा हेतु दाखिला लेने वाला/वाली/बच्चा/बच्ची को 14 साल की उम्र के बाद भी प्राथमिक शिक्षा के पूरा होने तक मुफ़्त शिक्षा प्रदान की जाएगी।"

एकदम माँ के मुँह से निकल पड़ा... "वाह! क्या दिन हैं?"

© NCERT not to be republished